महासभा के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों की असम व मेघालय की महत्वपूर्ण संगठन यात्रा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया, उपाध्यक्ष श्री रतन दूगड़, महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी, कोषाध्यक्ष श्री अरुण संचेती, राष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री विजयसिंह चोरड़िया दिनांक 28.10.11 को असम एवं मेघालय की तीन दिवसीय संगठन यात्रा के लिए कोलकाता से प्रस्थान कर गुवाहाटी पहुँचे। यात्रा का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है -

खारूपेटिया - महासभा के पदाधिकारीगण एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण अपनी संगठन यात्रा के अन्तर्गत 28.10.11 को गुवाहाटी पहुँचे एवं वहाँ से आरबीट्रेटर श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल, कार्यसमिति सदस्य श्री जीवनमल मालू, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा इस यात्रा में सम्मिलित होकर प्रातः 10 बजे खारूपेटिया पहुँचे जहाँ सभा के पदाधिकारीगण एवं विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल के सदस्यों की उपस्थिति में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ तत्पश्चात खारूपेटिया सभा के अध्यक्ष श्री जतनलालजी बुच्चा ने महासभा के पदाधिकारीगण एवं उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत किया। महासभा के पदाधिकारियों ने सभा पदाधिकारियों के साथ वहाँ चल रही विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया। महासभा अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज अणुव्रत चेतना दिवस है जो गुरुदेव श्री तुलसी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। गुरुदेव श्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को ऊँचाइयां प्रदान करने के लिए अनेकों आयाम हमारे सामने प्रस्तुत किए जिनमें अणुव्रत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति अणुव्रत को अपना कर अपन अपने जीवन को स्वर्णिम बना सकता है। अणुव्रत वर्तमान समस्याओं का समाधान भी है। गुरुदेव तुलसी ने जो भी कार्य किए वह प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए किए। उन्होंने अपने युग में भारत में धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक क्रांति कर एक राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान में महनीय भूमिका निभाई।

श्री चैनरूप चिण्डालिया ने बताया कि वर्तमान में महासभा के पास ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, विसर्जन, मेधावी छात्र परियोजना, आचार्यश्री महाश्रमण अमृत महोत्सव, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल, आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह इत्यादि न जाने कितनी परियोजनाएं हैं। इन सभी के साथ प्रत्येक श्रावक को पूर्णतः समर्पित भाव के साथ अपने समय, श्रम एवं संसाधनों का सही नियोजन करते हुए जुड़ना चाहिए। अगर सब व्यक्ति मिलकर थोड़ा-थोड़ा कार्य भी करते हैं तो संघ का काफी काम हो सकेगा। हम सबको संघीय प्रभावना में जुड़कर पूज्यवरों के स्वप्नों को साकार करना चाहिए। महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की तथा सूचना रजिस्टर का निरीक्षण करने के उपरान्त मिनट बुक बनाने का सुझाव दिया। सभा अध्यक्ष श्री जतनलालजी बुच्चा ने तदनुरूप कार्य करने का आश्वासन दिया एवं कहा कि खारूपेटिया सभा भवन में उपासना हॉल का कार्य चल रहा है, जिसे शीघ्र ही पूरा कर लिया जायेगा। सामाजिक अंकेक्षण फॉर्म भरकर भिजवाएंगे तथा जैन भारती के लिए भी उन्होंने हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

ढेकियाजुली - खारूपेटिया से प्रस्थान कर महासभा के पदाधिकारीगण के ढेकियाजुली पहुँचने से वहाँ उल्लास का वातावरण था। वहाँ के सभी विशिष्ट जनों द्वारा महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया की अध्यक्षता में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। महासभा अध्यक्ष ने सर्वप्रथम अणुव्रत चेतना दिवस के अवसर पर गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। तदुपरान्त वहाँ स्थित परिवारों के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। यह जानकारी मिली कि यहाँ पर तेरापंथी महिला मंडल है पर

सभा के रूप में कोई संगठन नहीं है। अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया एवं सभी पदाधिकारियों ने कहा कि ढेकियाजुली इतना अच्छा क्षेत्र है, काफी परिवार हैं परंतु सभा कार्यरत नहीं है। अतः सभा बनाना चाहिए, इससे तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों से जुड़ाव हो सकेगा आपको सारी जानकारी मिलती रहेगी। उपस्थित श्रावक समाज ने महासभा के पदाधिकारियों के निवेदन का सम्मान करते हुए कहा कि इससे अच्छा मौका और क्या हो सकता है? जब महासभा के अध्यक्ष और उनकी टीम यहाँ पर उपस्थित हैं। उपस्थित स्थानीय व्यक्तियों ने अध्यक्ष के रूप में श्री अभय कुमार संचेती के नाम का प्रस्ताव रखा। सर्वसम्मति से उन्हें नवगठित सभा का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। ढेकियाजुली सभा के गठन से वहाँ की महिला मंडल में भी उत्सुकता देखी गयी। महासभा अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने उन्हें सुझाव दिया कि सभा में सुचारू रूप से कार्य संचालन के लिए यह आवश्यक है कि सभा का महासभा के साथ एफिलियेशन हो और तेरापंथी सभा महासभा द्वारा निर्धारित संविधान का पालन करे। उन्होंने कहा कि महासभा हरसंभव सहयोग के लिए सदैव तत्पर है।

तेजपुर - दिनांक 28.10.11 को अपराह्न 4 बजे महासभा के पदाधिकारीगण एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण अपनी संगठन यात्रा के अन्तर्गत तेजपुर पहुँचे जहाँ एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में तेरापंथी सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, स्थानकवासी, श्री संघ के पदाधिकारीगण एवं जैन समाज के अनेक विशिष्ट गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सर्वप्रथम महासभा अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने अणुव्रत चेतना दिवस के उपलक्ष्य में गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने युग में भारत में धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक क्रांति कर एक राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान में महनीय भूमिका निभाई। मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनका अवदान उल्लेखनीय है। महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संघीय गतिविधियों में सभाओं के लिए करणीय कार्यों के प्रति उपस्थित सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया। तदुपरान्त महासभा के पदाधिकारियों ने तेजपुर सभा के पदाधिकारियों के साथ वहाँ चल रही विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया तथा महासभा की विभिन्न गतिविधियों एवं परियोजनाओं के संदर्भ में आवश्यक जानकारी से उन्हें अवगत कराया तथा इसमें जुड़ाव हेतु आह्वान किया।

नोगांव - दिनांक 28.10.11 को रात 9 बजे महासभा के पदाधिकारीगण नोगांव पहुँचे। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोगांव द्वारा स्थानीय तेरापंथी महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों एवं श्रावक समाज की एक संगोष्ठी महासभा के पदाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित की गई। सभा अध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा ने वहाँ संचालित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। महासभा अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने **अणुव्रत चेतना दिवस** के अवसर पर गुरुदेव श्री तुलसी के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को उजागर करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महासभा अध्यक्ष ने कहा कि नोगांव एक अच्छा क्षेत्र है और यहाँ काम की काफी संभावनाएं हैं परंतु जैसा काम होना चाहिए वैसा नहीं हो पा रहा है। अगर थोड़ा सा प्रयास किया जाए तो बहुत अच्छा कार्य हो सकता है। महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने कहा कि सबसे पहले संविधान के अनुसार चुनाव संपन्न करवाना आवश्यक है। अगर यहाँ पर अभी तक चुनाव सम्पन्न नहीं हुआ है तो शीघ्रातिशीघ्र चुनाव सम्पन्न करवाने की व्ययवस्था करें। समय पर चुनाव सम्पन्न होने से सारी गतिविधियाँ सुचारु रूप से चलती हैं। सभा के अध्यक्ष महोदय ने सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार ज्ञापित किया तथा महासभा के निर्देशानुसार सभी कार्य सम्पादित करने तथा चुनावी प्रक्रिया को जल्द से जल्द संपन्न करवाने का आश्वासन भी दिया। महासभा के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय विसर्जन प्रभारी श्री रतन दुगड़ ने अपने वक्तव्य में महासभा की विभिन्न गतिविधियों एवं परियोजनाओं की

जानकारी देते हुए इसमें जुड़ाव हेतु उपस्थितजनों से आह्वान किया तथा कहा कि सर्वप्रथम हम स्वयं का निर्माण करें। अपने आपको इतना ऊर्जावान एवं शक्ति सम्पन्न बनाएं ताकि हम संघ एवं समाज के कार्यों में अधिक जागरूकता के साथ सहभागी बन सकें

शिलौंग - महासभा के पदाधिकारीगण अपनी तीन दिवसीय संगठन यात्रा के अन्तर्गत 29.10.11 को प्रातः नोगांव से रवाना होकर दोपहर में शिलौंग पहुँचे। अपराह्न 3 बजे तेरापंथी सभा शिलौंग द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें तेरापंथ युवक परिषद एवं काफी संख्या में जैन समाज के विशिष्ट जन उपस्थित थे। महासभा के सभी पदाधिकारियों का तेरापंथी सभा के पदाधिकारियों द्वारा साहित्य एवं मोमेन्टो के द्वारा सम्मान किया गया। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने शिलौंग सभा द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया। तदुपरान्त उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान में महासभा के पास ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, विसर्जन, मेधावी छात्र परियोजना, महासभा शिक्षा सहयोग योजना, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल, आचार्यश्री तुलसी जन्म शताब्दी समारोह आदि कई महत्वपूर्ण उपक्रम हैं जिन्हें सभाओं के सहयोग से ही पूरा किया जा सकता है। उन्होंने पावर प्वायंट के माध्यम से सभी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं इसमें जुड़ाव हेतु सभी सदस्यों से आह्वान किया। इस अवसर पर महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संघीय गतिविधियों में सभाओं के लिए करणीय कार्यों के प्रति उपस्थित सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया। उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय विसर्जन प्रभारी श्री रतन दूगड़ ने विसर्जन योजना के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ का श्रावक समाज बहुत ही जागृत है तथा यहाँ सभी संस्थाओं में आपसी तालमेल बहुत अच्छा है और वे एक दूसरे के पूरक होकर कार्य करते हैं। उन्होंने विसर्जन योजना के बारे में जानकारी प्रदान की तथा आह्वान किया कि इस योजना से प्रत्येक व्यक्ति को जुड़ना चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति को यह लगे कि संघीय गतिविधियों में उसका भी अंश मात्र सहयोग है और इससे उन्हें गौरव की अनुभूति होगी। सभा के अध्यक्ष एवं मंत्री ने भी अपने वक्तव्य रखे एवं महासभा को हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर शिलौंग के कई अनुदानदाताओं ने आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल के निर्माण हेतु अनुदान की स्वीकृति प्रदान की।

गुवाहाटी - महासभा के पदाधिकारीगण दिनांक 30.10.11 को प्रातःकाल 4 बजे शिलौंग से रवाना होकर गौहाटी पहुँचे जहाँ आचार्य श्री महाश्रमण की प्रबुद्ध सुशिष्या साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित एक दिवसीय **असम स्तरीय श्रावक सम्मेलन** में सहभागिता की। मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात गुवाहाटी सभा के अध्यक्ष श्री जयचन्दलाल मालू ने महासभा के पदाधिकारीगण एवं उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत किया। महासभा के सभी पदाधिकारियों का सभा पदाधिकारियों द्वारा साहित्य एवं मोमेन्टो के द्वारा सम्मान किया गया। तत्पश्चात महासभा के पदाधिकारियों ने सभा पदाधिकारियों के साथ वहाँ चल रही विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया। महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का 2016 का चातुर्मास गुवाहाटी में है। अतः हमें एकबद्ध होकर सुनियोजित ढंग से ऐसा कार्य करना है जिससे पूज्यप्रवर को विश्व मंच पर प्रतिष्ठापित किया जा सके। महासभा अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने पावर प्वायंट द्वारा महासभा की विभिन्न गतिविधियों एवं परियोजना के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्रदान करते

हुए सभी गतिविधियों में जुड़ाव हेतु आह्वान किया। इस सम्मेलन में सिलचर, करीमगंज, शिलोंग, तेजपुर, बिलासीपाड़ा, धुबड़ी, बरपेटारोड समेत अनेक क्षेत्र के श्रावक समाज काफी संख्या में उपस्थित थे।

साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कहा कि संगठन शक्ति का आधार हैं। और इस दृष्टि से आज का यह सम्मेलन महज आयोजन नहीं बल्कि चिन्तन-मंथन का उपक्रम है। लक्ष्य निर्धारण तथा क्रियान्वयन में तत्परता से ही विकास सुनिश्चित हो सकेगा। आवश्यकता इस बात की है कि श्रावक समाज संघनिष्ठ हो, गुरु के प्रति समर्पित हो तथा परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढाले।

साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभाजी ने कहा कि श्रावक-श्राविका धर्मसंघ के अभिन्न अंग हैं। विकास के लिए उनको श्रद्धाशील, विनयशील और प्रगतिशील होना जरूरी है। संगठन की सुदृढ़ता के लिए सम्मिलित रूप से तथा समन्वय की भावना से कार्य करना आवश्यक है।

तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचन्दजी सिंघी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुवाहाटी में संघीय गतिविधियाँ सुचारु रूप से चल रही है। सभी कार्यकर्ता एकजुट एवं समर्पण भावना के साथ कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष गुवाहाटी तेरापंथी सभा श्रेष्ठ सभा के रूप में सबके सामने आई है। अतः अब और भी सक्रियतापूर्वक कार्यों को गति देना है।

इस अवसर पर गुवाहाटी के कई अनुदानदाताओं ने आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल के निर्माण हेतु अनुदान की स्वीकृति प्रदान की।

दोपहर में आपसी परिचर्चा हेतु एक कार्यकर्ता संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया जिसमें काफी संख्या में तेरापंथी सभाओं के प्रतिनिधिगण एव श्रावक समाज उपस्थित थे।

इस तरह महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया, उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय विसर्जन प्रभारी श्री रतन दूगड़, महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी, राष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री विजयसिंह चोरड़िया, कोषाध्यक्ष श्री अरुण संचेती की असम एवं मेघालय की संगठन यात्रा संघीय प्रभावना की दृष्टि से बहुत ही प्रभावी रही। महासभा के आरबीट्रेटर श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल, कार्यसमिति सदस्य श्री जीवनमल मालू तथा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के मंत्री श्री निर्मल कोटेचा का सहयोग इस संगठन यात्रा में अत्यंत सराहनीय रहा। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था सभाओं की सार-संभाल के साथ-साथ सभाओं के माध्यम से परिवारों की सार-संभाल तथा संघीय गतिविधियों की जानकारी। अमृत महोत्सव के अन्तर्गत पंचाचार की आराधना पर भी बल दिया गया। इस संगठन यात्रा से श्रावक समाज में नये उत्साह का संचार हुआ।

असम में रहने वाले श्रावक समाज द्वारा यह बताया गया कि महासभा के पदाधिकारियों की असम संगठन यात्रा प्रथम बार हो रही है। इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि रही ढेकियाजुली में नई सभा का गठन और जहाँ कहीं विचार भेद थे वहाँ इसे सुलझाकर सभी जगह सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण।